Unit - I

★ प्लेटो का न्याय सिद्धांत

1. प्लेटो के महान ग्रन्थ रिपब्लिक का सबसे महत्वपूर्ण विषय न्याय और उसके अधिवास की खोज करना है। रिपब्लिक में उसकी इस न्याय सम्बन्धी अवधारणा को इतना प्रमुख स्थान प्राप्त है कि रिपब्लिक का उपशीर्षक 'न्याय' से सम्बन्धित रखा गया है।

2. न्याय प्लेटो के विचार का मूल आधार है। प्लेटो का विचार है कि समाज या राज्य समाज की आवश्यकता और व्यक्ति की योग्यता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ कर्तव्य निश्चत करते है और हर व्यक्ति के द्वारा शांति पूर्वक अपने-अपने कर्तव्य को निभाना ही न्याय है।

3. प्लेटो (427 ई॰पू॰-347 ई॰पू॰) पाश्चात्य राजनीतिक दर्शन के महान विद्वान एवं सुकरात के शिष्य थे।

4. प्लेटो ने अपने न्याय सिद्धांत का उल्लेख अपनी महान कृति 'रिपब्लिक' में किया।

★ प्लेटो के न्याय सिद्धांत की विशेषताएँ

1- प्लेटो के अनुसार इन्द्रिय तृष्णा, साहस एवं बुद्धि का व्यवस्थित सन्तुलन और जीवन ही न्याय है।

2- प्लेटो की न्याय धारणा वैधानिक नहीं बल्कि नैतिक और सर्वव्यापी है।

3- प्लेटो के न्याय संबंधी विचार मनोवैज्ञानिक तत्व लिए हुए है।

4- प्लेटो के अनुसार, न्याय कृत्रिम या बाह्य वस्तु न होकर मनुष्य की अंतः क्रिया की एक पवित्र भावना है।

5- प्लेटो के अनुसार न्याय वह सिद्धांत है जो राज्य में सत्ता और एकता स्थापित करता है।

6- प्लेटो का न्याय सिद्धांत कार्यों के विशिष्टीकरण का प्रतिपादक है।

7- प्लेटो का न्याय सिद्धांत व्यक्तिवाद का घोर विरोधी है।

8- प्लेटो का न्याय सिद्धांत अहस्तक्षेप का सिद्धांत है।

★ प्लेटो के न्याय सिद्धांत की आलोचना

1- न्याय को कानूनी धारणा न मानकर नैतिक धारणा मानना –

न्याय शब्द के कानून को ध्यान में रखते हुए आलोचक कहते हैं कि उसका न्याय कानूनी न्याय नहीं है। यह न्याय आत्मसंयम, आत्म निषेध आदि नैतिक सिद्धातों पर आधारित है।

* लेकिन कानूनी शक्ति के अभाव में यह निष्क्रिय सिद्धांत है। व्यक्तियों की इच्छाओं और विभिन्न हितों में टकराव होने के कारण प्लेटो का न्याय सिद्धांत अधिक कारगर सिद्ध नहीं होता।

2- अधिकारों और दण्ड की व्यवस्था का अभाव –

प्लेटो के न्याय सिद्धांत में व्यक्ति के अधिकारों उसकी स्वतंत्रता और उसके कार्यों के क्षेत्र आदि की कोई व्यवस्था नहीं है।

* प्लेटो कहता है कि कोई भी किसी के कार्य में हस्तक्षेप न करे। लेकिन इस बात की कोई व्यवस्था नहीं करता है कि यदि कोई किसी के कार्य में ~~हस्ते~~ हस्तक्षेप करता है तो उसे क्या दंड देना चाहिए।

- प्लेटो का न्याय सिद्धांत व्यक्तियों में संघर्ष उत्पन्न होने का कोई समाधान नहीं करता है।

3- व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की उपेक्षा-

प्लेटो का न्याय सिद्धांत एक व्यक्ति एक कार्य के सिद्धांत पर आधारित है। उसने समाज का विभाजन तीन गुणों के आधार पर किया।

- लेकिन यह जरूरी नहीं है कि एक व्यक्ति मे एक ही गुण होता है। कभी-कभी एक व्यक्ति में अनेक गुण होते है।
- प्लेटो ने अपने सिद्धांत में व्यक्ति के एकांकी विकास की कल्पना की है, सर्वांगीण की नहीं।

4- न्याय का सिद्धांत निष्क्रिय है-

प्लेटो का न्याय सिद्धांत व्यक्ति को इतना आत्मसंयमी और मर्यादित कर देता है कि सामाजिक प्रगति की भावना का लोप हो जाना स्वाभाविक है।

5- अधिकारों की उपेक्षा-

2- आदर्श राज्य के निर्माण के प्रथम चरण में उस वर्ग का विकास होता है। जिसे प्लेटो ने उत्पादक वर्ग कहकर पुकारा है।

3- आदर्श राज्य के निर्माण का दूसरा चरण तब शुरू होता है। जब प्लेटो उस वर्ग के निर्माण की योजना प्रस्तुत करता करता है जो राज्य के साहस और उत्साह का प्रतिनिधि है।

4- आदर्श राज्य के निर्माण का तीसरा चरण तब शुरू होता है जब सैनिक वर्ग में से प्लेटो राज्य के विवेक तत्व का प्रतिनिधि करने वाले सर्वोच्च वर्ग का निर्माण करता है।

★ आदर्श राज्य की आलोचना

1- प्रो० जैनेट प्लेटो के आदर्श राज्य को पूर्णतः काल्पनिक बताते हुए लिखते हैं कि प्लेटो की राजनीति में एक भाग काल्पनिक है। तो दूसरा भाग शाश्वत है।

2- बार्कर का कहना है कि रिपब्लिक के अनुसार जो नगर है, उसका कहीं भी वर्णन नहीं है। यह वास्तविक शर्तों पर आधारित है।

3- प्लेटो के आदर्श राज्य में नागरिकों पर कठोर नियंत्रण की व्यवस्था थी। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि किसी भी राजनीतिक वातावरण में नागरिक पर इतना नियंत्रण नहीं किया जा सकता। प्लेटो की यह विचारधारा नगर राज्यों के सरकारी नियंत्रण से प्रभावित थी।

4- एक आदर्श राज्य में प्लेटो ने न्यायलयों की स्थापना, विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति और समाज की अनेक क्रिया-कलापों को वर्णन नहीं किया।

5- इसलिए कहा जा सकता है कि कानून और दण्ड की व्यवस्था न होने के कारण प्लेटो के आदर्श राज्य की योजना कल्पना बन कर रह गयी है। क्योंकि इसके अभाव में आदर्श राज्य की स्थापना हो ही नहीं सकती।

6- प्रजातंत्र को तो प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में कोई स्थान नहीं दिया।

7- जबकि वर्तमान काल में इसकी महत्वपूर्ण माँग है। और एक अच्छा शासन वह कहलाता है जिसमें शासन के अंतर्गत किसी-किसी प्रकार जनता का प्रतिनिधित्व हो।

8- लेकिन प्लेटो के आदर्श राज्य में इस विशेषता का अभाव है। इस आधार पर ही इसे प्रजातंत्र का विरोधी कहा जाता है।

(Plato's Views on Education)

★ प्लेटो के शिक्षा सम्बन्धी विचार

1- यदि प्लेटो के रिपब्लिक का मूल उद्देश्य न्याय के सिद्धांत की खोज करना है। तो शिक्षा उसके सामाजिक न्याय का साधन है।

2- प्लेटो की यह मान्यता थी कि एक अच्छे राजनीतिक जीवन के निर्माण के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है।

3- प्लेटो के आदर्श राज्य में शिक्षा का इतना महत्व है कि कई लोगो ने इसे रिपब्लिक का मुख्य विषय माना है।

4- प्लेटो ने शिक्षा को एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया माना है जिसके द्वारा मनुष्य समाज में अपने कर्तव्यों का पालन करना सीखता है। और एक अच्छे जीवन में आने वाली बाधाओं को शिक्षा द्वारा दूर किया जा सकता है।

5- प्लेटो ने अपने शिक्षा-सम्बन्धी विचारो में अपने गुरु सुकरात के वाक्य- सद्गुण ही ज्ञान है, को

बार-बार दोहराया है। वह मानते थे कि यदि अच्छी शिक्षा हो तो कोई भी सुधार सम्भव है। प्लेटो के अनुसार, राज्य का प्रथम और महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा की व्यवस्था करना है।

★ प्लेटो के अनुसार शिक्षा निम्न उद्देश्यों के लिए आवश्यक

1. दार्शनिक उद्देश्य - इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य सत्य और कल्याण की प्राप्ति है जिसे प्लेटो ने एक शब्द गुण के द्वारा व्यक्त किया।

★ प्लेटो की शिक्षा योजना के दो भाग

1- प्रारंभिक शिक्षा।
2- उच्च शिक्षा।

1- प्रारंभिक शिक्षा - यह 6 से 20 वर्ष की आयु तक के लिए है। इस शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नागरिकों में सामाजिकता का विकास करना है।

2- उच्च शिक्षा - इस शिक्षा के दो स्तर हैं - 20 से 30 वर्ष तक का शिक्षण तथा 30 से 35 वर्ष तक का शिक्षण। यह शिक्षा केवल संरक्षक वर्ग के लिए है।

★ प्लेटो की शिक्षा पद्धति की विशेषताएँ

1- राज्य द्वारा नियंत्रित तथा अनिवार्य शिक्षा - प्लेटो राज्य द्वारा नियंत्रित अनिवार्य शिक्षा पर बल देता है। वह शिक्षा को व्यक्तिगत क्षेत्र में होड़ना नहीं चाहता था। उसे व्यवसाय नहीं बनाना चाहता था।

सेबाइन के अनुसार - प्लेटो ने रिपब्लिक में राज्य नियंत्रित नियंत्रित अनिवार्य शिक्षा की योजना प्रस्तुत की है। उसकी यह योजना एथेन्स की शिक्षा प्रणाली बहुत आगे बढ़कर थी।

2- शिक्षा प्रणाली के दो भाग - प्लेटो की शिक्षा प्रणाली के दो भाग हैं - प्राथमिक एवं उच्चतर शिक्षा।

- प्राथमिक शिक्षा 6 वर्ष से 17 वर्ष तक आयु के लिए है। इस शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नागरिकों में सामाजिकता का विकास करना है।

- उच्चतर शिक्षा - इस शिक्षा के दो स्तर होते हैं - 20 से 30 वर्ष तक का शिक्षण और 30 से 35 वर्ष तक का शिक्षण। यह शिक्षा केवल संरक्षक वर्ग के लिए है।

3- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास - प्लेटो की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का शारीरिक मानसिक और सर्वांगीण विकास करना है। इस दृष्टि से यह वास्तविक और पूर्ण शिक्षा है।

4- स्त्री और पुरुष के लिए समान शिक्षा -

प्लेटो ने स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा उपलब्ध करायी। प्लेटो दोनों की योग्यता और क्षमता में कोई भेद नहीं करता है। वह दोनों के समान प्रशिक्षण पर बल देता है। दोनों को ही राज्य के कार्यों के लिए तैयार करना चाहता है।

* प्लेटो के अनुसार स्त्रियों के लिए राज्य में राजपद द्वारा उसी तरह खुले हैं जिस प्रकार ये पुरुषों के लिये खुले हैं।

5- शरीर और मन का विकास - प्लेटो ने अपनी शिक्षा योजना के द्वारा शरीर और मन दोनों के विकास पर उचित ध्यान दिया है। शरीर के विकास के लिये व्यायाम और मन के विकास के लिए संगीत की शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है।

★ प्लेटो की शिक्षा पद्धति की आलोचनाएँ

1- अप्रजातान्त्रिक और एकांगी - प्लेटो की शिक्षा योजना को अप्रजातान्त्रिक तथा एकांगी शिक्षा योजना की संज्ञा दी गयी है। इसका राज्य के समस्त नागरिकों से कोई सम्बंध नहीं है।

* प्लेटो की शिक्षा योजना में राज्य का अत्यंत विशाल जनसमुदाय (उत्पादक वर्ग) शिक्षा के लाभ से पूरी तरह वंचित कर दिया। इस वर्ग के लिये प्लेटो ने शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की।

* प्लेटो ने शिक्षा की व्यवस्था केवल अभिजात वर्ग के लिये की।

* बैलूर के अनुसार प्लेटो अभिजात वर्ग का व्यक्ति

होने के कारण वह उत्पादकों से घृणा करता था।

2- साहित्य की उपेक्षा - प्लेटो की शिक्षा योजना में साहित्य को बहुत कम और गणित को अधिक महत्व दिया गया है। जिसे सही नहीं कहा जा सकता है।

* साहित्य जीवन का दर्पण और मानव की कोमल भावनाओं को विकसित कर उसके दृष्टिकोण को व्यापक करता है। इस दृष्टि से गणित और दर्शन के साथ कला और साहित्य की शिक्षा पर भी समान रूप से बल दिया जाना चाहिए।

3- न्याय सिद्धांत के विरुद्ध - प्लेटो ने उत्पादक वर्ग की शिक्षा की उपेक्षा कर अपने न्याय सिद्धांत की अवहेलना की है। यदि उत्पादक वर्ग को शिक्षा से वंचित कर दिया जाए तो वह कुशल और श्रेष्ठ कैसे बनेगा।

आधुनिक युग में यह बहुत आवश्यक है कि उत्पादक वर्ग को तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण उत्पादक वर्ग को उपलब्ध कराया जाए। तभी हमारे देश का विकास हो पाएगा।

प्लेटो के साम्यवादी विचार निम्नलिखित आधारों पर आश्रित थें।

1- दार्शनिक आधार - प्लेटो ने मानवीय आत्मा के तीन तत्वों के समान ही समाज में वर्गों का विभाजन किया था। प्लेटो का मत था कि यदि विवेकशील व्यक्ति को तृष्णा तत्व के उत्पादक वर्ग के समान ही अधिकार प्रदान किये जाएंगे तो वह लोककल्याण को भूलकर परिवार और धन संपत्ति की चिंता में लग जाएगा।

इस स्थिति पर काबू पाने के लिए यह जरूरी है कि विवेकशील शासक की स्थापना हो। और उसने यह स्वयं लिखा है कि, संरक्षक तथा सन्यासी का स्थान सर्वोच्च है। संरक्षक और सन्यासी को सांसारिक चिन्ताओं से दूर रहना चाहिए।

2- राजनीतिक आधार- प्लेटो ने साम्यवाद के राजनीतिक आधार पर विशेष जोर दिया था। प्लेटो का विचार था कि यदि राजनीति और सत्ता को एक हाथ में सौंप दिया जाए तो राज्य में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। यदि प्रशासकों को परिवार और सम्पत्ति का दायित्व सौंप दिया जाये तो वह अपने स्वार्थ को पूरा करने में लगेगा और वह प्रजा के हितों को महत्व नहीं देंगे।

इसीलिए वेपर ने प्लेटो के शब्दों को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, प्रशासक वर्ग तथा सैनिक वर्ग को सम्पत्ति तथा स्त्री के व्यक्तिगत अधिकार नहीं दिये जाने चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो इसके भयंकर परिणाम होंगे।

3- व्यवहारिक आधार - प्लेटो के अनुसार यदि राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों को एक ही हाथ में सौंप दिया जाये तो यह राज्य में भ्रष्टता को जन्म देता है। जिसके कारण राज्य की कार्यकुशलता को ठेस पहुँचती है।

• इससे बचने के लिये प्लेटो ने दोनों शक्तियों को विभाजित करके साम्यवादी योजना को सैनिक तथा शासक वर्ग तक ही केन्द्रित रखा।

4- मनोवैज्ञानिक आधार - बार्कर के अनुसार, यदि उनके आदर्श राज्य के दो प्रधान वर्ग शासक और सैनिक वर्ग को सही ढंग और निःस्वार्थ भावना से कार्य करना है, तो उन्हे साम्यवादी व्यवस्था के अंतर्गत ही रहना चाहिए।

★ सम्पत्ति के साम्यवाद की आलोचनाएँ

1- अर्द्ध साम्यवाद - प्रो० बार्कर का मत था कि प्लेटो की सम्पत्ति का साम्यवाद अर्द्ध साम्यवाद है क्योंकि यह राज्य के सभी वर्गों पर समान रूप से लागू नहीं होता।

2- मानव की मूल प्रवृत्ति की अवहेलना - सम्पत्ति की साम्यवाद की धारणा मानव की मूल प्रवृत्ति की अवहेलना पर आधारित है। निजी सम्पत्ति प्राप्त करना, उसे बनाए रखने व उसमें वृद्धि करने की मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है जिसे दबाना उचित प्रतीत नहीं होता।

3- भेदभाव की नीति - प्लेटो ने एक ओर तो राज्य के संरक्षक वर्ग के लिए सम्पत्ति अर्जित का निषेध किया है लेकिन दूसरी ओर उसने उत्पादक वर्ग को सम्पत्ति अर्जित करने की अनुमति दी है। और यह राज्य की भेदभाव की नीति है। जो राज्य के आन्तरिक को खतरे में डालने के लिए सदा तत्पर है।

प्लेटो

————

428 ई० पू० मे इनका जन्म हुआ
~~-399~~ जन्म स्थान एथेन्स
मृत्यु - 347 ई० पू०
~~348~~

वास्तविक नाम :- अरिस्तो क्लीज

उनके चौड़े और कुप कंधो के कारण उनके व्यायाम शिक्षक ने उन्हे प्लेटो नाम दिया और कलान्तर मे वही नाम प्रसिद्ध हुआ ।

20 वर्ष बाद प्लेटो सुकरात के विद्यालय मे भेज दिया गया ।

प्लेटो की जन्मशैली :-

उसके पिता अरिस्तोन एथेन्स के अन्तिम सम्राट कादस वंश मे हुआ था । प्लेटो की प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उन्होने सुकरात से ज्ञान अर्जन किया ।

उन्होने अपने जीवन का उद्देश्य बदल दिया ।

Shivalal

फोस्टर के शब्दो में "प्लेटो के जीवन के मोड़ में 399 ई० में आया जबकि वो 28 वर्ष का था"

II मैक्सी "प्लेटो में सुकरात पुनः जीवित हो गया "

प्लेटो ने सर्वोत्तम शासन प्रणाली के लिए भ्रमण किया — इटली मिस्त्र और यूनान के नगरों में (12 वर्षों तक) प्लेटो ने भारत के गंगा किनारो की भी यात्रा की थी

जब वह सिसली गया तो वहाँ सिसली के सिराक्यूज राज्य में उसकी भेंट डियोन नामक एक अतिसंस्कृत व्यक्ति एवं वहाँ के रा[जा] दियोनिसियस प्रथम से हुई लेकिन कुछ समय के बाद प्लेटो को अपनी मातृभूमि की याद आने लगी और वह एथेन्स पुनः लौट गया।

Date / /
Page No.

प्लेटो ने 388 ई० पू० में एक शिक्षण संस्थान खोला।
यही प्लेटो की वह प्रसिद्ध अकादमी थी। जिसे यूरोप का प्रथम विश्वविद्यालय कहा जाता है। इस अकादमी मे राजनीति कानून और दर्शन सभी विषयो की शिक्षा की व्यवस्था थी किन्तु गणित शास्त्र और ज्यामितीय की शिक्षा को प्रधानता प्राप्त थी। विश्वविद्यालय के द्वार पर शब्द लिखे हुए थे।

प्लेटो के द्वारा ग्रन्थ क्या है।

1. The republic

गुरु का नाम - सौक्रेट

2.

प्लेटो का रियल Name - अरस्तू क्लीज

3.

विश्वविद्यालय के द्वार पर :-

"Lat no man ignorant of geometry Enter hear,"

संवाद :- प्लेटो के सभी ग्रन्थ प्रश्नोत्तर रूप में संवाद या वार्तालाप की शैली में लिखे हुए होने के कारण उन्हें संवाद कहा जाता है।

प्लेटो ने इस प्रकार के संवाद लिखे हैं, उनकी किताब 36 (ग्रन्थ) रिपब्लिक, स्टेट्समैन एण्ड लॉज, अपोलॉजी और संवाद जिसने उनकी कीर्ति को अमर बनाया उस ग्रन्थ का नाम है। republic

Republic by Plato

"प्लेटो की सर्वोत्तम कृति है। Republic। इसे गणराज्य और न्याय (republic का concerning) दोहरा शीर्षक प्राप्त है। किन्तु इस आधार पर इसे राजनीति विज्ञान या विधान शास्त्र का ही ग्रन्थ नहीं समझा जाना चाहिए।

बार्कर " यह मानव की सम्पूर्ण दर्शन की दिशा में एक प्रयास है ।

प्लेटो की न्याय सम्बन्धी धारणाएँ :-
परम्परागत सिद्धान्त
1. क्रान्तिकारी सिद्धान्त
2. कार्यकरण सिद्धान्त
3.

बार्कर ने लिखा है । कि चाहे वो वर्ग की धारणा का विरोध कर रहा हो । या समाज की विद्यान व्यवस्था में सुधार के लिए प्रयत्नशील हो ।

" न्याय प्लेटो के विचार का मूल आधार रहा है "

डिबन्सटीन " इन्होंने कहा है । कि प्लेटो के " न्याय सम्बन्धी विवेचना में उसके राजनीतिक दर्शन के समस्त तत्व शामिल है ,

Date / /
Page No.

Most न्याय की इस धारणा के सम्बन्ध में अरस्तू ने कहा है "न्याय वह सम्पूर्ण सद्गुण है। जो हम एक दूसरे के साथ अपने व्यवहार में प्रदर्शित करते है।"

1 परम्परागत सिद्धान्त :- प्लेटो के संवाद में न्याय की इस धारणा का प्रतिपादन सिफालस उसके बाद उसके पुत्र पोलीमार्कस द्वारा किया गया।

सिफालस के अनुसार "सत्य बोलना और दूसरे के ऋण का चुकना ही न्याय है।"

पोलीमार्कस के अनुसार "प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रति उचित न्याय है।"

(i) प्लेटो कहता है। कि सत्य बोलने और ऋण चुकाने के रूप में न्याय परिभाषा करना दोषपूर्ण है। क्योंकि यह दोनो ही कार्य कुछ परिस्थितियो अन्याय पूर्ण और अनुचित हो सकते है।

B.A.LLB ⇒ Ist year

paper - IInd

plato